

पिसुन वि. (तद्.) पिशुन, चुगलखोर।

पिसुनता स्त्री. (तद्.) चुगली, चुगलखोरी।

पिसूरी पुं. (देश.) एक प्रकार का भूरे रंग का छोटा हिरण।

पिसौनी स्त्री. (देश.) पिसाई।

पिस्कब्ज पुं. (फा. पेशकब्ज) कटार, कटारी।

पिस्टन पुं. (अं.) किसी यंत्र में आगे-पीछे होने वाली चकली या छोटा बेलनाकार पुर्जा।

पिस्टई वि. (देश.) पिस्ते के रंग का, पीलापन लिए हल्का हरे रंग का।

पिस्ता पुं. (फा. पिस्त.) 1. एक वृक्ष जिसके फल की गिरी मेवे के रूप में खाई जाती है 2. इस वृक्ष के फल की गिरी।

पिस्तौल स्त्री. (अं. पिस्टल) गोली दागने का एक छोटा उपकरण, तमंचा।

पिस्सू पुं. (फा. पशश:) एक छोटा पंखविहीन और रक्त-चूषक कीट परजीवी।

पिहकना अ.क्रि. (देश.) कोयल, पपिहा तथा मोर आदि का बोलना या चहकना।

पिहानी स्त्री. (तद्.) आवरण, ढक्कन, ढकनी।

पिहित वि. (तत्.) ढका हुआ, आच्छादित पुं. (तत्.) एक अर्थालंकार जिससे मन के गुप्त भाव की अभिव्यक्ति दर्शायी जाती है।

पींग स्त्री. (देश.) किसी पेड़ की टहनी से रस्सी लटकाकर बनाया गया झूला।

पीजन पुं. (तद्.) धुनकी (रुई धुनने का एक उपकरण)।

पीजना स.क्रि. (तद्.) रुई धुनना।

पींड पुं. (तत्.) 1. तना 2. वृक्ष के जड़ की गोलाकार मिट्टी 3. कोल्हू के चारों ओर बना मिट्टी का घेरा।

पींडी स्त्री. (तद्.) पिंडली।

पी पुं. (देश.) 1. प्रिय 2. पति (तद्.) पीना जैसे- जल पी खेलने जाना स्त्री. पपीहे की बोली।

पीउ पुं. (तद्.) 1. प्रिय 2. पति।

पीउख पुं. (तद्.) पीयूष, अमृत।

पीक स्त्री. (देश.) पान चबाने के उपरांत थूके जाने वाला रस।

पीकना क्रि. (अनु.) पी-पी ध्वनि करना।

पीच पुं. (देश.) चावल का माँड।

पीछा पुं. (तद्.) पीठ की तरफ का भाग, किसी वस्तु के पीछे की तरफ का भाग मुहा. पीछा करना- किसी को पकड़ने या भगाने हेतु उसके पीछे-पीछे जाना, पीछा छोड़ना 1. साथ छोड़ना 2. परेशान करना, छोड़ देना; पीछा छूटना- किसी अप्रिय व्यक्ति/वस्तु/काम आदि से छुटकारा पाना, पीछा न छोड़ना 1. तंग करना 2. हर समय साथ लगे रहना।

पीछे क्रि.वि. (तद्.) 1. पीठ की ओर 2. किसी के सामने न रहने के समय उसकी अनुपस्थिति में जैसे-रमेश तुम्हारे पीछे आया था 3. पश्चात् 4. किसी के निमित्त जैसे- ट्रेन में चाय वाले के पीछे लोगों में कहासुनी हो गई विलो. आगे मुहा. पीछे छूटना- मार्ग में पीछे रह जाना; पीछे चलना- अनुयायी होना; (किसी के) पीछे लगाना- किसी को पकड़ने के लिए तैनात करना; पीछे दौड़ना- बिना सोचे किसी काम में लग जाना; पीछे पड़े रहना- बार-बार कहना, परेशान करना; पीछे फिरना- कार्य को आरंभ करके उससे अलग हो जाना; पीछे लगाना- किसी की जासूसी कराना।

पीजन पु. (तद्.) धुनकी (रुई धुनने की)।

पीटना स.क्रि. (तद्.) 1. किसी व्यक्ति या वस्तु पर आघात करना, प्रताड़न करना, मारना 2. धातु आदि यथा सोने, चाँदी आदि के टुकड़े को फैलाने के लिए उस पर हथौड़े आदि से आघात करना।

पीठ पुं. (तत्.) 1. लकड़ी, पत्थर तथा धातु आदि से बनाया गया आसन/पीढ़ा/चौकी आदि 2. विद्यार्थियों/साधकों के बैठने हेतु बनाया गया आसन 3. न्यायाधीश का पद, न्यायपीठ 4. शिक्षा का स्थान/केंद्र जैसे- विद्यापीठ 5. देवमूर्ति आदि का आधार 6. देवी/देवता का निवास स्थान जैसे-